इमाम हुसैन (अ०) कौन हैं? और वाक़ेअ-ए-कर्बला क्या है?

जनाब मौलाना सैय्यद अख़्तर हुसैन साहब नक़वी

इमाम हुसैन (अ0) जनाब अबुतालिब के पोते और हज़रत अली (अ0) के बेटे और पैग़म्बर (स0) के नवासे थे अगर देखा जाए तो मालूम होगा कि यह उस माहौल में पले थे जिस माहौल की बुलन्दी का सही तसव्वुर भी हम नहीं कर सकते और यह उस पैग़म्बर (स0) की आग़ोश में पले थे जिसके रास्ते में काँटे बिछाए जाते थे फिर भी दीने हक़ के फैलाने से ज़बान न रोकते थे इसी वजह से दीन का पैग़ाम हम तक पहुँचा अब आप खुद ग़ौर कीजिये कि जो आदमी इस माहौल में पला होगा कि जब शाम के तख़्त पर बैठे हुए फासिक़ व फाजिर हाकिम ने इमाम हुसैन (अ0) से बैअत चाही और इमाम हुसैन (अ0) ने नहीं कह दी, उसने मज़ालिम ढाए उन्होंने फिर भी बैअत नहीं की यह किस लिए? वह सिर्फ़ अपनी जीत के लिए नहीं बल्कि दीन की हिफ़ाज़त के लिए और कुफ़्र के क़िले को खण्डहर बनाने के लिए। इसी तरह के बेशुमार मज़ालिम को सहा बस इस लिए कि दीन की इज़्ज़त क़ायम रहे इन्हीं की वजह से आज भी दीन बाक़ी है वरना आज सारी दुनिया बुरे रास्तों पर भटकती हौती और अंधेरे रास्ते में ठोकरे खाती फिरती। हम मुख़तलिफ़ बलाओं में गिरफ़्तार रहते इस वजह से कुदरत ने एक रहनुमा पैदा किया जिसका नाम हुसैन (अ0) है उसने हमको दीन का एहसास क़ायम रखने के लिए इतने मज़ालिम सहे जिसकी शुरुआत उस वक़्त हुई जब मदीने के हाकिम (वलीद बिन अतबा) को यज़ीद ने हुक्म दिया कि इमाम हुसैन (अ0) से बैअत लो और उसने इमाम हुसैन (अ0) को यज़ीद की बैअत की तरफ़ दावत दी तो उस पैग़ाम को ठुकराते हुए आपने गुरबत का सफर चुना और वतन से जुदा होकर मक्का आए यहाँ आप तक़रीबन पाँच महीने रहे मगर यहाँ भी आपके ख़ून के बहाने का सामान किया गया फिर इराक़ की तरफ़ निकले मगर रास्ते ही में यज़ीद की फ़ौज आ गई और उसके घेरे में आप कर्बला पहुँचे। यज़ीद की फौजें भी बैअत का सवाल करती थीं मगर इमाम हुसैन (अ0) ने बैअत न की तो आप पर और आपके साथियों पर पानी बन्द कर दिया और फिर आशूर के दिन सुबह से अस्र तक 72 कुर्बानियाँ पेश करके हज़रत इमाम हुसैन (अ0) तीन दिन के भूखे–प्यासे शहीद हो गये और ख़ानदाने रिसालत की बीबियाँ शहर–शहर फिराइ गईं। यह सब जुल्म इमाम (अ0) ने बर्दाश्त किये और हमको सच्चे रास्ते से भटकने नहीं दिया। यह है वाक़ेअ–ए–कर्बला जिसे हम मुहर्रम में याद करते हैं। □□□